

हिन्दी

अक्षरों में

Submitted-By Submitted-To

Ajay Kumar,

Suresh-Rathod, Sir

Department:

Hindi

Remark:

Combination:

Sites - 2nd year (3rd sem)

हिन्दी

असाइनमेंट

Submitted-By Submitted-To

Ajay Kumar,

Suresh-Rathod, Sir

Department:

Remark:

Hindi

Combination:

SMes - 2nd year (3rd sem)

ग्लोबल-वार्मिंग

आज के समय में ग्लोबल-वार्मिंग एक बड़ी -
पर्यावरण समस्या है। जिसका हम सब सामना कर
रहे हैं। तब जिसका समाधान स्वार्थी रूप से कारणा
आवश्यक हो गया है। वास्तव में प्रवृत्ति के सतह
पर निरंतर तब स्वार्थी रूप से तापमान का बढ़ना
ग्लोबल-वार्मिंग पर किश्या है। सभी देशों द्वारा विश्व
स्तर पर इस विषय पर व्यापक रूप से चर्चा होनी
चाहिए। यह देशों से प्रकृति के संतुलन, जैव
विविधता तब जलवायु परिवर्तनों का परभावित करता
है।- पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड के मात्रा में
बढ़ने के कारण प्रवृत्ति के सतह पर निरंतर तापमान का
बढ़ना ग्लोबल-वार्मिंग है।- प्रवृत्ति का बढ़ता तापमान
विभिन्न आशकाओं (खतरों) को जन्म देता है।
साथ ही इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व के सतह
पैदा करता है।-

ठंड का मौसम, बर्फ के चढ़ानों का पिघलना,
तापमान का बढ़ना; हवा पारिस्वरण पैटर्न में बदलाव
'बिन मौसम के वर्षा का होना, ओजोन परत में छेद
भारी लूफान की बढ़ना, चक्रवात, सूखा, बाढ़
और इसी तरह के अनेक परभाव हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारक

- ग्रीन हाउस गैस जैसे CO_2 , मीथेन, प्रोवा वगैरे ग्लोबल वार्मिंग मुख्य कारक हैं। - इसका सीधा प्रभाव समुद्री स्तर का विस्तार, पिघलती बर्फ का घट जाना, जल शिथिल, अपरत्याशित जलवायु परिवर्तन पर होता है, यह जीवन पर बुरा है - मृत्यों के संकट का परितुलित करता है। आकड़ों के अनुसार यह अनुमान लगाया जा रहा है। की मानव जीवन के बढ़ते मांग के कारण - विस्तीर्ण सतहों के माध्यम से तापमान में बहुत - अधिक बढ़ोतरी आयी है। जिसके फलस्वरूप वैश्विक स्तर पर वायुमंडलीय ग्रीन हाउस गैस सांद्रता के माप में भी बढ़ी हुई है। - पिछली सदी के 1983, 1987, 1988, 1989 और 1991 सबसे गर्म वर्ष रहे हैं। यह मापा गया

उद्बल आयेगा जो की पर्यावरण पर बुरा प्रभाव डाल सकता है।-

CO_2 के स्तर में बढ़ोतरी "ग्रीन हाउस गैस प्रभाव" का कारक है; जो सभी ग्रीन हाउस गैस (जलवाष्प, CO_2 , मीथेन, ओजोन) जर्मल विकरण को अवशोषित करता है।- तथा सभी दिशाओं में विकीर्ण होकर और पृथ्वी के सतह पर वापस आ जाता है।- जिससे सतह का समान बढ़ कर ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण बनता है।-

वातावरण पर कार्बन डाइऑक्साइड

का हानिकारक-परभाव

पृथ्वी पर CO_2 में वृद्धि से, निरंतर अग्नी त्रयों का बढ़ना, गर्म लहरें-तेज तूफान की आचानक धटना अपरत्याशित और अनचाहे चक्रवात, ओजोन परत का नुक्सान पहुँचाना, बाढ़, भारी बारिश सूखा, भोजन की कमी, बीमारी तथा मृत्यु-इत्यादि मानव जीवन पर काफी दूर तक परभाव डाल रहे हैं। - जीवाश्म ईंधन के दहन, अर्थरको का उपयोग, वनों का काटना, बिजली की अत्याधिक खपत, फिरज में उपयोग होने वाले गैस इत्यादि के कारणवश वातावरण में CO_2 का अत्याधिक उत्सर्जन हो रहा है। - आकड़ों के अनुसार यदि निरंतर बढ़ते बढ़ते CO_2 का अत्याधिक उत्सर्जन हो रहा है, अगर उत्सर्जन पर नियंत्रण नहीं पाया गया हो यह अज्ञात है कि यदि 2021 तक ग्लोबल-वार्मिंग में -

ग्लोबल वार्मिंग के परभाव

ग्लोबल वार्मिंग के स्तरों में वृद्धि से साफ तौर पर ग्लोबल वार्मिंग के परभाव देखा जा सकता है।-

45 भूगर्भीय सर्वेक्षण (US-Geological Survey) के अनुसार मोंटाना ग्लेशियर नेशनल पार्क पर 150 ग्लेशियर मौजूद थे पर ग्लोबल वार्मिंग के वजह से वर्तमान में मात्र 25 ग्लेशियर बचे हैं।-

आधिक स्तर पर जलवायु में परिवर्तन तथा तापमान से ऊर्जा (वायुमंडल) के उपरी सतह पर ठंड तथा ऊष्ण कटिबंधीय महासागर के गर्म होने से ग्लेशियर लुफान आधिक स्तरनाक, शक्तिशाली और मजबूत बन जाते हैं। 2012 को 1885 के बाद सबसे गर्म वर्ष दर्ज किया है। तथा 2003 को 2013 के साथ सबसे गर्म वर्ष के रूप में देखा गया है।

ग्लोबल वार्मिंग के फलस्वरूप वातावरण के जल वायु में; बरफी गर्मी का मौसम कम होता

इनने ग्लोबल वार्मिंग में अत्यधिक वृद्धि किया -
जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं का अनपेक्षित
परकोप सामने आया जैसे - बाढ़ चक्रवात, सुनामी,
सूखा भूस्तरवलन, भोजन, की लमी, बर्फ पिघलना,
महामारील रोग; मृत्यों आदि इस कारणवश परकृति
के घटना चक्र में असंतुलन उत्पन्न होता है। जो इस
जरूरत पर जीवन के अस्तित्व के समाप्ति का संकेत है।

- ग्लोबल वार्मिंग के वृद्धि के कारण, पृथ्वी में वायुमंडल
में जल - वाष्पीकरण अधिक होता है। जिसके बादल
में गरम हुआ स गैस का निर्माण होता है।- जो पुनः
ग्लोबल वार्मिंग के कारण बनता है।- जीवाश्म ईंधन
का जलना, उर्वरक का उपयोग, अन्य गैसों में वृद्धि
जैसे CO_2 दरोपास्कारिक आजीन, और नाइट्रस
ऑक्साइड भी ग्लोबल वार्मिंग के कारक हैं।

ग्लोबल वार्मिंग का समाधान

सरकारी एजेंसियों, व्यवसाय परधान, निजी क्षेत्र, NGOs आदि द्वारा बहुत से कार्यक्रम, ग्लोबल वार्मिंग कम करने के लिए चलाए जा रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग के वजह से पृथ्वी के वातावरण में कुछ क्षति हो रही है। (बर्फ की चट्टानों का पिघलना) जिससे किसी भी समाधान के मद्दायम से पुनः पराप्त नहीं किया जा सकत है। जहाँ भी हम रुकना नहीं चाहते और सबको बेहतर पर्यास करना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग को प्रभाव को कम करने के लिए हमें ग्रीन हाउस गैस को उत्सर्जन कम करना चाहिए तथा वातावरण में हो रहे कुछ अलगाव को जहाँ से चला आ रहा है। - उन्हें अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। -

निष्कर्ष

ग्लोबल वार्मिंग के परभाव से जीवन पर खतरा बढ़ता जा रहा है। - हमें सदैव के लिए बुरी आदतों का त्याग करना चाहिए क्योंकि यह CO_2 के स्तर में वृद्धि कर कर रहा है। और जीवन गरीब हाउस गैस के परभाव के वजह से पृथ्वी का तपमान बढ़ रहा है। - हमें पैसे का अन्यायुन कटौति पर रोक लगाना चाहिए, बिजली का उपयोग कम करना चाहिए, कड़की का चलाना बंद करना चाहिए आदि -। - ग्लोबल वार्मिंग कम करने का उपाय, हमें बिजली के स्वान पर स्वच्छ ऊर्जा जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा भू-तापीय ऊर्जा द्वारा उत्पादित ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए। कोयला तेल के चलन के स्तर को कम करना चाहिए - पारिदहन और ईलेक्ट्रिक उपकरणों का उपयोग कम करना होगा - ग्लोबल - वार्मिंग का स्तर काफी हद तक कम होगा। -